द्विशताब्दी महोत्सव

भगवान स्वामिनारायण द्विशताब्दी महोत्सव
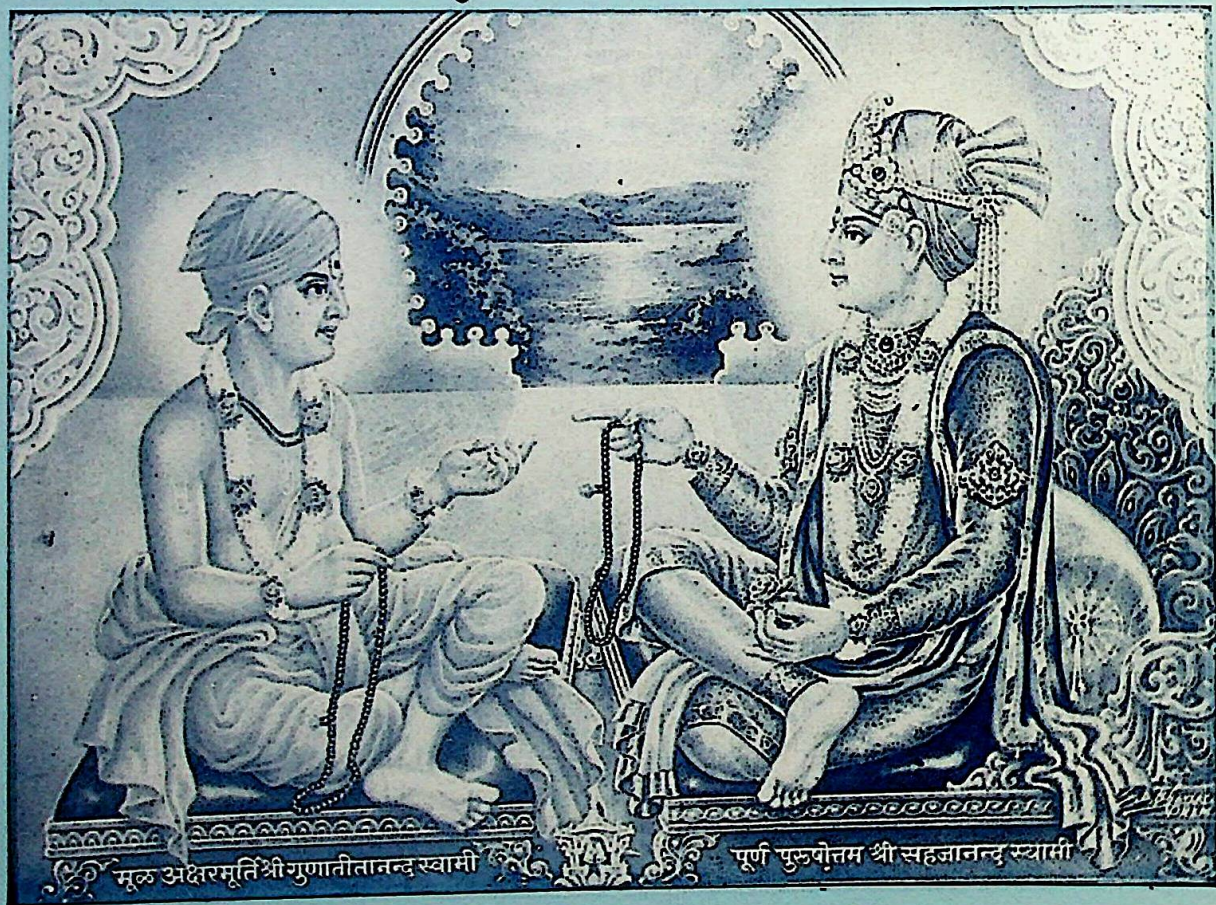
१७८१-१९८१

श्री गुणातीतानंद स्वामी

श्री सहजानंद स्वामी

द्विशताब्दीका विरल प्रसंग

महापुरुषोंके जीवनचरित्रसे हमें प्रेरणा मिलती है। अवतारी पुरुष हमारे जीवनको उन्नत–प्रभावशाली बनाते हैं। भगवान जब धरती पर प्रकट होते हैं, तब उनकी शरणमें जानेवाले असंख्य मनुष्योंको वे शाश्वत मुक्ति देते हैं।

अभी २०० वर्ष पहलेकी बात है। भगवान स्वामिनारायण धरती पर विचरण कर रहे थे। (१७८१-१९८१) उनकी द्विशताब्दी हम मनाने जा रहे हैं। वैसे वे शरीरसे भले ही अब धरती पर नहीं हैं, लेकिन देश और विदेशोंमें बसते लाखों हरिभक्तोंके हृदयोंमें वे अब भी जीवित हैं, कार्यशील हैं, अखण्ड और अक्षय हैं।

देश और कालसे पर रहे, भगवान स्वामिनारायणका तेज, देश–विदेशोंमें अनन्त समय तक असंख्य लोगोंके अन्तःकरणको प्रकाशित करता रहेगा, इसमें कोई शंका नहीं है।

हमारा फर्ज है कि हम उनको पहचानें, उनको समझें, उनकी उपासना करें, उनकी आज्ञाका पालन करें, फलस्वरुप हम सुखी रहें, और अन्तमें शाश्वत मुक्ति प्राप्त करें।

अपने कल्याणकी दिशा मिल गई है, उदाहरण भी काफी मिले हैं, तो अब देर किस बातकी है?

उनकी द्विशताब्दी मनानेका सुवर्ण अवसर बिल्कुल हमारे सामने है। जीवनमें ऐसे अवसर बार बार तो नहीं आते, जब यह अवसर आ ही गया है तो समझिये कि हमारे अनेक जन्मोंके पुण्योंका एक साथ उदय हुआ है। धन्य क्षण प्राप्त हुई है।

धर्म संस्थापक

उनका जन्म उत्तरा खंडमें अयोध्या के नजदीक छपैया गांवमें हुआ। उनके पिता वेदविद्वान थे और माता गुणवती और भक्तिनिष्ठ थी। केवल ग्यारह साल की उम्र में ही वे गृहत्याग करके हिमालय स्थित पुल्हाश्रम में तपश्चर्या करने को अकेले निकल पड़े। तपःसमाप्ति के बाद उन्होंने पैदल चलकर सारे भारत की तीर्थयात्रा की। अन्त में वे गुजरात में रामानन्द स्वामी के एक आश्रम में आ पहुँचे। रामानन्द स्वामी इस युवान ब्रह्मचारी की तेजस्विताको पहचान गये, अपनी गद्दी उन्हें सौंपकर दूसरे ही महीने वे चल बसे। गुरु रामानन्द स्वामीने यद्यपि उनका नाम 'सहजानन्द' रखा लेकिन जनता के दिलों में वे 'स्वामिनारायण' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

उन्होंने भी एलान किया कि 'मैं ही इस सारे विश्व का कर्ता, धर्ता और हर्ता हूँ। मैं ही शरण्य-प्रभु हूँ, श्रेयोनिधान हूँ, स्वामिनारायण हूँ। मेरी भक्ति करो, मेरे नाम-मंत्र का जप करो, मेरी मूर्ति का दर्शन करो और अक्षरधाम के अधिकारी बनो।'

यहीं से उनके अवतार कार्य का मानो प्रारंभ हुआ। वे तीस साल तक सारे गुजरातमें सतत विचरण करते ही रहे। वे घोडे पर और पैदल भी दिनरात खूब घूमे। फलस्वरुप सारे गुजरात राज्य में एक नई सांस्कृतिक चेतना एवं एकता स्थापित हुई। उनके कई अनुयायियों में से हजारों व्यक्ति वर्तमान लेकर व्रती बने और नियम धारण करके त्यागी सन्त भी बने। एक विशाल धार्मिक आन्दोलन चल पड़ा। परिणाम यह हुआ कि धर्म-परम्पराओं के प्रति जनता का सद्भाव बढ़ा।

इस नवीन धर्म-सम्प्रदाय के प्रति किसान, मजदूर और व्यवसायी कर्मचारी-बढ़ई लोहार, सुनार आदि भी आकर्षित हुए। भगवान स्वामिनारायण में गरीबोंने अपने उद्धारक को पाया। वे दीन और दुःखी लोगों में हमेशा आत्मीयभाव से मिलते जुलते थे। उन लोगों के दिलों में यह विश्वास पैदा हो गया था कि 'यही महापुरुष अवश्य हमारा उद्धार करेगा।'

उस समयमें कुछ बगावतखोर व्यक्ति भी थे, जो कि डाका डालते थे, लूटमार भी करते थे। उन्होंने भगवान स्वामिनारायण के सात्त्विक प्रभाव में आकर उनके चरणों में अपने अस्त्रशस्त्र रख दिये, व व्रतनियम लेकर वे सदाचारी-सत्संगी बन गये। यह एक ऐसी विचारक्रान्ति थी, जो जनता के रक्त में फैल गई, लोग अपने आप उसमें घुलमिल गये। उन्होंने आमजनता को भारतीय आदर्श के अनुसार मानवजीवन जीने को प्रेरित किया और धार्मिकमूल्यों की स्थापना की। इसके साथ साथ धर्मस्थानों की भी पुनर्रचना की और उनमें एक नया प्राण प्रतिष्ठित किया। संसारी एवं त्यागी वर्ग की समाज में जो आवश्यकता है उस पर भी प्रकाश डाला। इस समतुला के प्रभाव के कारण जनता में धर्मश्रद्धा अधिक दृढ हुई। लोगों में सुख, शान्ति और समृद्धि की वृद्धि हुई। फलस्वरूप स्त्रीवर्ग भी संप्रदायकी ओर आकर्षित हुआ।

सिद्धान्त और कार्य

'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का वह जमाना था। किसी की कोई सलामती नहीं थी। राजकीय स्थिरता का भी दर्शन नहीं होता था। इस अव्यवस्था का लाभ उठाने के लिये कई पाखण्डियों ने लोकजीवन में अपना अड्डा जमा दिया था। वहम, व्यसन और अत्याचारों का ही मानो साम्राज्य था। भगवान स्वामिनारायणने इन बुराइयों के मूल में करारा प्रहार किया।

उन्होंने 'सतीप्रथा' को बन्द करवाया। नवजात कन्याओं को दूध में मुँह डुबोकर मार डालने के रिवाज को रोका। धर्म के नाम पर यज्ञों में बलि के रूप में की जाती पशुहिंसा को खतम किया। संस्कृत भाषा के प्रति आदर की प्रतिष्ठा करवाई और सन्तों को संस्कृत के विशिष्ट विद्वान बनाये। सन्तकवियों को प्रेरणा देकर उनके द्वारा कीर्तन-साहित्य को समृद्ध किया। संगीत को भक्ति का रंग चढ़ाकर, वह कला समाज में प्रतिष्ठित करवाई। नवीन भव्य मन्दिरों का निर्माण करवाकर स्थापत्य-कला विकसित की। जीवन में श्रम और सादगी का आदर सुस्थापित किया। समाज के निम्न-स्तर के लोगों का पक्ष लेकर उनको सामाजिक प्रतिष्ठा दी। कठिन तत्त्वज्ञान को जीवनव्यवहार के अनुकूल सरल भाषा में पेश किया।

उनके सिद्धान्त-चारों वेद, ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्-भागवत, विष्णुसहस्रनाम, गीता, विदुरनीति, वासुदेव-माहात्म्य एवं याज्ञवल्क्य स्मृति-इन मान्य शास्त्रों पर आधारित हैं। जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, परब्रह्म इन पाँच तत्त्वों को वे नित्य मानकर जीव को ब्रह्मस्वरुप बनाने के लिये आदेश देते हैं। बिना ऐसा प्रयत्न किये जीव कभी भगवान के पास नहीं पहुँच सकता है। वे कहते हैं कि भगवान एक ऐसा निराला तत्त्व है, जिसमें किसी जीव का प्रवेश सम्भव नहीं है। मनुष्य मरने के बाद नहीं, अपितु जीते जी मुक्ति पा सकता है। इसके लिये नियमित भक्ति एवं उपासना करना जरूरी है।

उन्होंने वर्णाश्रमधर्मको मान्यता दी है, फिर भी इस धर्मसम्प्रदाय में किसी वर्णविशेषके लिये कोई प्रतिबन्ध नहीं रखा है। वे दीनबन्धु थे। वे इच्छा और भावना को देखकर किसी भी व्यक्ति के घर अथवा उसके व्यावसायिक स्थान पर पहुँच जाते थे, इतना ही नहीं उनसे घुलमिल जाते थे। उनका आतिथ्य भी ग्रहण करते थे। उनकी रहनसहन, वाणी और वेश भी आसानीसे अपना लेते थे। मनुष्यकी आध्यात्मिक एकता पर वे विशेष जोर देते थे।

वे हिंदुधर्म की मान्यताओंके प्रखर समर्थक थे, फिर भी उन्होंने कभी किसी अन्य धर्म की निन्दा नहीं की है। वे धर्मांतरके कट्टर विरोधी थे। इसीलिये सभी वर्गों के लोग उनसे आकर्षित होते थे। कई मुस्लीम एवं पारसी गृहस्थ उनके अनुयायी हुए हैं। उनका बिना धर्मपरिवर्तन किये आध्यात्मिक विकासमें उन्होंने उनको सहायता की है।

उन्होंने जो भव्य मन्दिरोंकी रचना की है वह प्राय: देहातोंमें ही की है । मन्दिर बनवानेमें उन्होंने जनतासे श्रमदान मांगा है, साधु और हरिभक्तोंके संयुक्त परिश्रमसे ही मन्दिरोंका निर्माण किया है, उन्होंने स्वयं मन्दिरके पत्थर ढोये हैं । ऐसे ही सरोवरोंका भी निर्माण किया है ।

उनके द्वारा कई स्थानों पर कई चमत्कार भी हुए हैं :- लोगोंको समाधि में दैवी दर्शन करवाया है। प्रश्न पूछनेके पहेले ही वे उन प्रश्नोंका उत्तर दे देते थे । दूरदूरके स्थानोंमें, एक ही समयमें प्रकट होकर वे दर्शन देते थे । भूत और भविष्यकी घटनाओंका संकेत करते थे । लोक-परलोककी विशिष्ट परिस्थिति-योंका प्रत्यक्ष दर्शन भी करवाते थे ।

उनके इस अप्रतिम सामर्थ्यसे लोग अवश्य चकित रह जाते थे, फिर भी उनके प्रभावका प्रमुख स्रोत तो था उनकी भव्य साधुता ही ।

परम्परा

संसारमें ऐसा भी देखा गया है कि धर्मके संस्थापक के चल बसने पर उनको लोग भूल जाते है, उनके आदेश, उपदेश सन्देश हवामें उड़ जाते हैं । भगवान स्वामिनारायण ऐसे धर्मस्थापकोंसे बिल्कुल भिन्न स्तरके थे । समुद्रमें दीवारकी तरह एक बड़ी भारी लहर अचानक आ जाये और बादमें सब शान्त हो जाये, ऐसा उनके विषयमें नहीं हुआ । वे केवल धर्मसंस्थापक ही नहीं थे, वे युगप्रवर्तक भी थे, उनका युग चिरकालीन है, जो प्रतिदिन विशेष विकसित होता जा रहा है ।

उन्होंने अपने सन्तवृन्दमेंसे अक्षरमूर्ति सद्. गुणातीतानन्द स्वामीका अपने धामके रुपमें परिचय करवाया । उनके बाद ब्र. स्व. प्रागजी भक्तने यह समझाया कि इसी जन्ममें मुक्ति मिल सकती है, ब्राह्मी स्थिति प्राप्त की जा सकती है; इतना ही नहीं भगवान पुरूषोत्तम के पास शाश्वत रुपसे रहा भी जा सकता है ! भगवान स्वामिनारायणने कई बार यह कहा भी है कि 'वे ब्रह्मस्वरुप संत में प्रकट रूप से निवास करते हैं ।' यह बात कई जगह प्रसंगवश प्रकट हो चुकी है । अतःएव अक्षर पुरुषोत्तमकी ब्रह्म-परब्रह्मकी सर्वोपरी एवं विशुद्ध उपासनाके विषयमें ब्र. स्व. शास्त्रीजी महाराज, (१८६५-१९५१) बड़े सदाग्रही थे, उन्होंने सन्-१९२७ में गुजरातमें बोचासण गाँवमें एक भव्य मन्दिर बनवाया, जिसमें अक्षर-पुरुषोत्तम भगवान की मूर्तियोंकी प्राणप्रतिष्ठा उन्होंने की । उसके बाद तो ऐसे और सात भव्य मन्दिरोंका निर्माण हुआ है । अक्षरपुरुषोत्तम संस्थाका यह प्रादुर्भाव-प्रसंग समझा जा सकता है ।

उनके बाद ब्र. स्व. योगीजी महाराजने (१८९२-१९७१) इस संस्थाका नेतृत्व किया । इन दो विभूतियोंने जो कार्य शुरु किया है, वह वर्तमान कालमें प्रकट ब्रह्मस्वरुप प्रमुख स्वामी महाराज आगे बढ़ा रहे है, अक्षरपुरुषोत्तमकी उपासनाके सिद्धान्तमें एवं उसी उद्देश्यसे संस्थापित इस संस्थामें नवीन

चैतन्य भरनेके कार्यमें दिनरात लगे हुए हैं। भगवान स्वामिनारायणने बताये कार्य पूरे किये जा रहे हैं, उन्होंने सौंपा हुआ विरसा समृद्ध होता जा रहा है तदर्थ प्रवृत्तियाँ काफी फूलीफली हैं, जिसका संक्षिप्त परिचय हम आगे आपको देने जा रहे हैं।

कलकी एक झलक

सत्संगकी नींव मजबूत हो गई है। देहातों के कम पढे जनगणके साथ, शहरोंका पढ़ालिखा जनवर्ग स्वार्पणके विषयमें मानो होड लगा रहा है। आश्चर्य तो इस बातका है कि कई आशास्पद युवान अपनी पढ़ाई एवं अपनी कारकिर्दगी छोडकर त्यागी-साधु बननेके लिये-सम्प्रदायकी सेवा करनेके लिये स्वेच्छासे आ रहे हैं। देशमें एवं विदेशोंमें कई नये मन्दिर खुल रहे हैं और युवकोंके बड़े बड़े संगठन स्थापित होते जा रहे हैं।

प्रकाशन विभागकी ओरसे पुस्तकों एवं सामयिकों का नियमित प्रकाशन हो रहा है। यहाँ शैक्षणिक प्रवृत्ति चल रही है तो साथ साथ आरोग्यके सत्र भी चलाये जाते हैं। कई बालमण्डल एवं महिला मण्डल स्वतंत्र रूपसे चल रहे हैं, उनके नियमित रूपसे वर्ग भी चलते हैं। संस्कृतका अध्ययन, विश्वकी विविध तत्त्वज्ञान प्रवृत्तियोंका तुलनात्मक अभ्यास, रक्तदान, अकाल राहतकार्य, कीर्तन आराधना धार्मिक उत्सव, वैद्यकीय सेवा आदि कई प्रवृत्तियाँ कई जगह चल रही हैं, उनका पूरा चित्र तो वही देख सकता है जो इन प्रवृत्तियोंमें सक्रिय रूपसे शामिल है।

इन अनेकविध प्रवृत्तियोंकी सिरमौर प्रवृत्ति तो है, पूज्य प्रमुख स्वामीजीका सतत विचरण। वे देशमें और परदेशोंमें भी खूब घूमते हैं। इससे हरिभक्तोंको उनके समागमका अपार सुख मिलता है और इतर लोगोंमें सत्संगके लाभकी रुचि पैदा होती है।

सम्प्रदायके सिद्धान्तोंको जीवनमें उतारनेवालोंकी संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है इसीलिये इसका भविष्य हम उज्ज्वल बता रहे हैं। सम्प्रदायका आदर्श बहुत ऊँचा है। उसका तत्त्वज्ञान सत्य पर आधारित एवं गहरा है। बढ़ते जा रहे अनुयायियोंकी श्रद्धा अधिक दृढ होती जा रही है। इसीसे हमें आगामी कलकी झलक मिलती है।

यहाँ किसी एक व्यक्तिकी सत्ता सम्पत्ति-नहीं है घबराहट पैदा हो ऐसा कोई गुप्त रहस्य भी यहाँ नहीं है। यहाँ जो कोई चाहे, वह आ सकता है, पूछ सकता है, देख सकता है समझ सकता है।

अभ्यर्थना

भगवान स्वामिनारायण द्विशताब्दी महोत्सवमें भाग लेनेके लिये हमारा आपको भावपूर्ण आमंत्रण है। हम चाहते हैं कि आप संस्थाका साहित्य प्राप्त करें और वह पढ़ें, सत्संगकी कथाकहानियाँ सुननेके लिये आप सभाओंमें आयें। पूज्य प्रमुख स्वामी एवं अन्य सन्तोंका समागम करें, उनसे प्रश्नोत्तर करें, पत्रव्यवहारके द्वारा हमारा संपर्क करें। आप निकट में आकर मिलें, देखें, सुनें, समझें। यदि आपमें सद्भाव होगा तो आप आसानीसे सत्संगका हेतु समझ जायेंगे, आप सत्संगी हो जायेंगे, आपका श्रेय होगा। आपके ऊपर भगवान की दया बरसेगी, आपके भीतर भगवानके ऐश्वर्यका प्रवेश होगा। हम आपसे सद्भाव एवं सहकारकी भिक्षा मांगते हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि इससे आपको ऊँचे ध्येयके साथ सुख, शान्ति, संतोष, सामर्थ्य एवं समृद्धि की प्राप्ति होगी, अवश्य होगी। आप निःसंकोच, निःसन्देह, निर्भय होकर पधारिये।

आपके ऊपर, आपके परिवारके ऊपर, आपके अच्छे व्यवसायके ऊपर हमेशा भगवान स्वामिनारायणके आशीर्वाद बरसो और भगवानकी कृपासे आपकी राहमें अनुकूलता रहो।

हमारी इस अभ्यर्थनाका आपके ऊपर यदि कोई असर हुआ हो, तदनुसार आप हमें इस मंगल कार्यमें किसी प्रकारका सहयोग देना चाहते हों तो कृपया हमें सूचित कीजियेगा। हम आपके सूचन एवं सहकारका स्वागत करेंगे।

बोचासणवासी
श्री अक्षरपुरुषोत्तम संस्था
शाहीबाग रोड, अहमदाबाद, ३८०००४

सत्संग और सत्संगी

यह सम्प्रदाय 'सत्संग' नाम से परिचित है। भगवान स्वामिनारायण को अनन्यभाव से जो भजता है एवं उनका आश्रित होता है, वह अनुयायी – सत्संगी कहलाता है। प्रत्येक सत्संगी भगवान के बनाये व्रतनियमों का पालन करता है। सदेह मुक्ति पाने के लिये वह पुरुषार्थ एवं परमार्थ करता है। वह अन्तमें अक्षरधाम में भगवान के साथ निवास करने की महेच्छा रखता है।

सत्संग के व्रतनियम

(१) प्रतिदिन भगवान की पूजा करना, (२) दिन में कम से कम एक बार मन्दिर में भगवद्-दर्शन के लिये जाना, (३) एकादशी एवं निश्चित तिथि में उपवास करना, (कुछ लोग निर्जल उपवास और विशेष व्रत भी रखते हैं) (४) चौरी, वैर, मद्यमांस और व्यभिचार का त्याग, (५) जीवमात्र की हिंसा न करना (६) अपने देह पर अत्याचार न करना, आत्महत्या का त्याग, (७) प्रतिदिन सन्तसमागम करना, (८) धर्मग्रन्थों का नियमित पाठ एवं कीर्तनगान करना, ९) विमुख व्यक्ति से बात न करना, (१० भगवान एवं भगवान के भक्तों का द्रोह न करना, (११) अपनी आय का दशांश या विशांश धर्मकार्य में खर्च करना, (१२) धार्मिक उत्सवो में भाग लेना, तीर्थयात्रा करना, साधु और सत्संगी के प्रति आदर रखना।

मंदिर – संस्कार धाम

देशमें कई जगह अपने मठ-मन्दिर बने हैं, विदेश में भी ब्रिटन, अफ्रीका एवं अमरीकामें भी बने हैं। उपर्युक्त व्रतनियमोंका पालन करनेवाले सत्संगियोंकी संख्या पचास लाखसे अधिक है। आध्यात्मिक प्रवृत्तियोंका केन्द्र-स्थान मन्दिर है। वहाँ साधु रहते हैं। दिनमें पाँच बार वे पूजन कथाकीर्तन करते हैं, थाल-नैवेद्य, आरती, प्रवचन आदि होते हैं। वहाँ भण्डार भी रहता है, अतिथियों को प्रसाद-भोजन मिलता है। वहाँ पैसे, अनाज, वस्त्र, भूमि मकान, आभूषण आदि चीजोंके दानका स्वीकार किया जाता है। वहीं धार्मिक उत्सव भी मनाये जाते हैं।

विचरण

पिछले सात वर्षोंमें प्रमुख स्वामी महाराजने देश और विदेशोंमें शहरों और देहातोंमें कुल मिलाकर ३२८९ स्थानों पर विचरण किया है, ६५७८० घरोंमें उनकी पधरावनी हुई है। साधुओं के मण्डल उनको सौंपे गये वर्तुलोंमें विचरण करते रहते है और लोगोंको उपदेश देते हैं।

भगवान स्वामिनारायणका उपदेश जनताको पहुँचाया जाता है। विचरणक हेतु है, आश्रितोंकी श्रद्धा दृढ करना, चिन्तन विशुद्ध करना और व्यवहार शुद्धि हो ऐसे व्रतनियम देना-व्यसन, वहम, चोरी मद्यमांस, व्यभिचार, वैरसे मुक्त करना।

प्रकाशन

धर्मके ग्रन्थों, चरित्रों, पाठ्यपुस्तकों, भाष्यों और भगवान एवं भगवानके सन्तों एवं सिद्धान्तोंके प्रति विशेष प्रीति हो तथा समझदारी बढे ऐसे साहित्यका प्रकाशन किया जाता है।

सामयिक

'स्वामिनारायण ब्लिस' (अंग्रेजी त्रैमासिक), 'स्वामिनारायण प्रकाश' (गुजराती मासिक), 'सत्संग पत्रिका' (गुजराती साप्ताहिक), 'नीलकण्ठ' (युवकोंका गुजराती मासिक) और 'प्रेमवती' (महिलाओंका गुजराती त्रैमासिक)।

शैक्षणिक प्रवृत्ति

गोंडल में गुरुकुल और छत्रालयके साथ हाईस्कूल चलता है। वल्लभ विद्यानगर में कोलेज के छात्रोंके लिये छात्रालय चालु है। वहाँ योग्य छात्रोंको संस्थाकी ओरसे शिष्यवृत्तियाँ भी दी जाती हैं।

वम्बई, सारंगपुर और अहमदाबादमें संस्कृत के अभ्यासार्थ पाठशालएँ चलती हैं।

अहमदावादमें 'स्कूल ओफ कम्पेरेटीव फिलोसोफी' चलता है।

वम्बई, वल्लभ विद्यानगर, अमदावाद, गोंडल और सारंगपुरमें पुस्तकालय चलते हैं।

वम्बई अहमदावाद, सारंगपुर और गोंडलमें संगीत और चित्रकलाके केन्द्र चलते हैं

आरोग्यप्रवृत्ति

सत्संगके कुछ डोकटरोंने एक 'मेडिकल एसोसिएशन'की स्थापना की है। यह एसोसिएशन बिना

कोम-जातिके भेद रखे, बीमारोंकी निदान-चिकित्सा करता है; अन्यत्र वैद्यकीय सेवाके लिये भिन्न भिन्न स्थानों पर वह शिविरोंकी आयोजना भी करता है। बच्चोंके स्वास्थ्यकी सुरक्षाके लिये जाँच-पडताल भी की जाती है। साधु और सत्संगी 'ब्लडबैंक' में रक्तदान भी करते हैं। तबीबी श्रेय यज्ञ नेत्र-यज्ञ और दन्तयज्ञ भी आयोजित होते हैं। सारी व्यवस्था संस्थाके तत्त्वावधानमें की जाती है।

युवक प्रवृत्ति
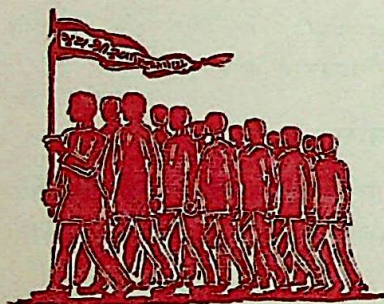
सैंकडों युवक मण्डलों के द्वारा करीब पच्चीस हजार युवक विविध सेवाप्रवृत्तिमें लगे हैं। उनकी प्रधान प्रवृत्तियाँ हैं, वहम और व्यसनने मुक्ति दिलाना, सदाचार प्रचार, निरक्षरता-निवारण, सांस्कृतिक आयोजन एवं पुस्तकालयोंका संचालन इत्यादि।

उनकी प्रवृत्तियोंका प्रधानस्रोत है रविवारकी सभा। सभी केन्द्रों में वह नियमित होती है। उसके द्वारा युवकोंका संगठन दृढ होता है, उसमें सूचनाओं की लेनदेन होती है और कार्यकरों की कठिनाइयोंका हल सोचा जाता है। प्रार्थना और प्रवचन तो होते ही हैं।

सत्संग परीक्षा

सत्संगके महापुरुषों की जीवनी को एवं सम्प्रदायके सिद्धान्तोंका पूरा ज्ञान देनेके लिये संस्थाने 'सत्संग परीक्षा' कायम की है, उसके लिये उपरोक्त उद्देश्यको ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तक तैयार किये गये हैं।

युवक मण्डलों एवं महिला मण्डलों में उन पाठ्य-पुस्तकोंका अध्यापन करवाया जाता है। इन परीक्षा-ओं में प्रतिवर्ष देश-विदेशके हजारों युवक शामिल होते हैं। इस तरह नई पीढीको सम्प्रदाय के संस्कारोंसे सींचा जाता है।

विदेशोंमें १४ देश ऐसे हैं, जिनमें ३५ युवक केन्द्र फिलहाल सक्रिय हैं। यहाँ आदिवासी प्रदेशों में इस प्रवृत्तिके विशेष विकासके लिये अधिक ध्यान दिया जाता है।

स्वयंसेवक दल

अकाल एवं बाढ जैसे विकराल अवसर पर राहत कार्य करनेके लिये स्वयसेवक दल की रचना की गई है।

अध्यापक मण्डल

शिक्षको एवं प्राध्यापकोंका एक मण्डल कायम किया है, जो युवकोंको प्रौढशिक्षण एव निरक्षरता

निवारणके कार्य में मार्गदर्शन देता है ।

अन्य प्रवृत्तियाँ

(१) बुक बैंक, २) अध्ययन कक्षाएँ, (३) राहत कार्य, (४) बाल-युवक महोत्सव, (५) आदिवासी कल्याण प्रवृत्ति, (६) संस्कृत शिक्षण, (७ फिलोसोफी (तत्त्वज्ञान) संगीत और कला का अभ्यास ।

इतर प्रवृत्तियोंका संचालन, एक अलग चेरीटेबल संस्थाके द्वारा किया जा रहा है ।

महिला प्रवृत्ति

सम्प्रदायकी मर्यादाके अनुसार त्यागी वर्ग महिलाओंके सम्मुख न जा सकता है, न उनसे बातचीत भी कर सकता है । इसलिये दर्शन-कथाश्रवण आदिके लिये उनकी अलग व्यवस्था की जाती है, फिर भी सत्संगके नियमों का दृढतासे पालन हो इसलिये उनके प्रति आदरभावकी कोई कमी नहीं रहती ।

गोशाला

बोचासण, सारंगपुर-गढडा और गोंडलमें बडी गोशालाएँ आधुनिक पद्धत्तिसे चल रही हैं । वहां देशी गायों- भैसोंके साथ विदेशी जर्सी और होल्स्टीन की गायें भी हैं । बोचासणकी गोशालामें २०० गायें एवं १०० भैंसें हैं । इन गोशालाके केन्द्रों को भारत सरकारकी ओरसे पारितोषिक मिले हैं । दूसरे मन्दिरोंमें छोटे तौर पर गोशालाएँ चलती हैं ।

द्विशताब्दी महोत्सवका पंचवर्षीय कार्यक्रम
१९७७-१९८१

उपर्युक्त प्रवृत्तियोंके उपरांत 'द्विशताब्दी महोत्सव' को ध्यान में रखकर १९७७ से एक खास कार्यक्रमका आयोजन किया गया है, उसके प्रधान अंग निम्नानुसार हैं।

पदयात्रा

सत्संगके विशिष्ट सन्तोंकी निगरानी में, उनकी अध्यक्षतामें पदयात्राओंका आयोजन किया जाता है। उसमें सन्त और हरिभक्त पैदल चलकर एक गाँवसे दूसरे गाँव जाते हैं और वहाँ वे द्विशताब्दीकी घोषणा करते हैं और भगवानके उपदेशोंका प्रचार करते हैं।

योगयज्ञ

आध्यात्मिक विकासके इस कार्यक्रममें साधक स्वेच्छासे निम्नोक्त अंगोमें शामिल हो सकता है: (१) धार्मिक ग्रंथोका पाठ, (२) भगवान के मंत्रका

आलेखन, (३) मंत्रजाप, (४) दंडवत् प्रणाम (५) प्रदक्षिणा ।

योगयज्ञका हेतु : सत्संगी योग साधना करें, मनको भक्तिमें लगावें, भगवान और भगवानके संतों के उपकारका कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करें। आध्यात्मिक विकास प्राप्त कर सच्चे भक्त होकर अपने सभी कर्म भगवानको समर्पित करें ।

व्यसनमुक्ति

पंचवर्षीय आयोजनके अनुसार २ लाख सत्संगी २ लाख व्यसनियोंके व्यसन (मद्य, ताडी, बीडी, सिगरेट, हुक्का, चूना तंबाकू, सुंघनी, गांजा–चरस इत्यादि) छुडायेंगे ।

आदिवासी विस्तार

साधुओं और युवकोंकी मंडलियाँ आदिवासी प्रदेशोंमें घुमकर, वहाँकी बस्तीको निम्नोक्त विशिष्ट प्रबोध करेंगे-(१) नीति पालन, (२) व्यसनमुक्ति, (३) भगवद्भक्ति, (४) बालकोंके लिये छात्रालय, (५) अध्ययन कक्षाएँ (६) शिक्षण और बुकबैंक के लिये सहायता, (७) आरोग्य शिबिर और इस्पिताल, (८) गृहउद्योग ।

यह कार्य १९७६ से शुरू हो गया है ।

इस्पिताल प्रवृत्ति

पूज्य प्रमुख स्वामी महाराजने चारूतर आरोग्य मंडलको इस्पिताल बांधनेके लिये पांच लाख रूपयों का और महुवा शहेरके इस्पितालको ढेढ लाख रूपयों-का अनुदान किया है । इस संस्थाके मन्दिरों में मुफ्त दवाखानेके लिये प्रबंध होगा । विविध स्थानोंमें रोगनिदान और चिकित्साके मेडिकल केम्प आयोजित होंगे । अनुकूल स्थानमें निसर्ग उपचार-का केन्द्र शुरु किया जायेगा ।

शिक्षण प्रवृत्ति

(१) किसी मध्यस्थ स्थानमें छात्रालयके साथ एक विद्यालय चालू करनेका संकल्प किया है ।

(२) समूह में रहकर अभ्यास एवं विविध इतर प्रवृत्ति की जा सके इस उद्देश्यसे युवकोंके लिये छात्रालय बनवानेका निश्चय किया है ।

(३) भारतीय संस्कृति, धर्म और तत्वज्ञान के विशेष अध्ययनके लिये एक केन्द्रीय संस्थाकी स्थापना की जायेगी ।

(४) सन्दर्भ, संशोधन एवं अध्ययनमें उपयुक्त ग्रन्थोंसे युक्त एक आदर्श पुस्तकालय शुरु करनेका विचार है ।

(५) भारतीय संस्कृतिकी भव्य विरासतके

अभ्यासार्थ एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियोंके प्रचार के लिये मन्दिरों में उनके केन्द्र बनाये जायेंगे ।

ग्रामोफोन रेकार्ड और केसेट

योगीजी महाराज एवं प्रमुख स्वामी महाराजके महत्त्वके कुछ प्रवचनोंकी टेप तैयार हो चुकी है । हिन्दी और गुजराती में कई कीर्तन भी टेप किये गये है । इस कार्यके लिये कुछ सन्तोंने तालीम पा ली है । इस प्रवृत्तिका और विकास करनेका निर्णय हो चुका है ।

पुस्तकें एवं सामयिक

प्रसिद्ध लेखकों की लेखिनी से एक ग्रन्थमाला लिखवाई जा रही है, उस मालाकी कुछ पुस्तकें प्रकट हो चुकी हैं, कुछ होनेवाली हैं । उसमें भगवानकी वाणी, उनके उपदेशका सार, उनके अनन्य भक्त सन्तों एवं हरिभक्तोंका परिचय प्रकट करनेकी योजना है । तदुपरान्त प्रचलित सामयिकोंके कुछ विशेषांक भी प्रकट किये जायेंगे ।

फिल्म

भगवान स्वामिनारायण के जीवन एवं कार्यकलाप को प्रत्यक्ष करानेवाली एक दस्तावेजी फिल्म भी तैयार की जायेगी ।

पूजा-साधन
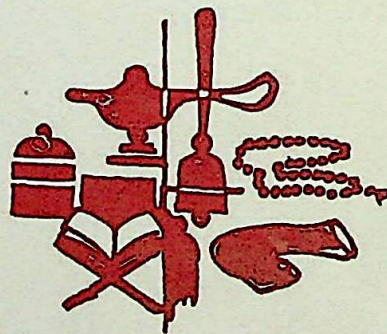
घरों में, दूकानों में, कारखानों में, होटोंमें भगवानकी पूजाके साधन होने चाहिये । इस विचारसे साधनों को बनवानेका काम वैसे तो शुरू हो गया है उसका विकास करना है ।

कीर्तन-आराधना
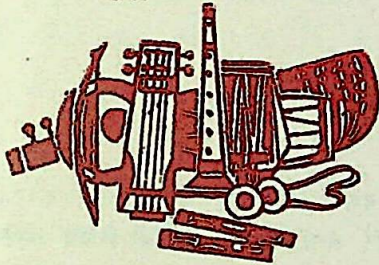
खास तालीम प्राप्त सन्तोंके द्वारा शास्त्रीय और सुगम संगीत पद्धतिसे लोगोंके समक्ष कीर्तन पेश आराधनाके १०० से अधिक प्रयोग हो चुके हैं। आगे चलकर उसके और भी कई प्रयोग अवश्य होंगे। इस पद्धतिसे कीर्तन करनेका लोकशिक्षण भी दिया जायेगा।

साधुओंका दीक्षा महोत्सव

द्विशताब्दीके विरल-पावन पर्व पर कुछ युवानोंको यह भगवत्प्रेरणा हुई कि वे अपना सारा जीवन भगवान स्वामिनारायणकी सेवामें समर्पित कर दे. साधुकी दीक्षा ले लें। इसके लिये कोई प्रलोभन नहीं दिया जाता। कोई प्रलोभन है तो यही कि उनको हमारे पूज्य प्रमुख स्वामी महाराजका गजब आकर्षण। दबावकी तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। यह उनका स्वैच्छिक संकल्प है, उनका अपूर्व उत्साह है। उन युवानोंकी योग्यता पहले देखी जाती है, उसके बाद तालीम दी जाती है तब जाकर वे दीक्षाके पात्र बनते हैं।

उसमें यह अंश बडी प्रसन्नताका है कि जो युवक दीक्षाके लिये उत्सुक हैं वे सुखी एवं संस्कारी परिवारोंके हैं, शिक्षित, बुद्धिशाली एव स्वभावसे सदाचारी हैं।

मन्दिर निर्माण

द्विशताब्दी महोत्सवकी कालावधि में अपने शहर में, अपने गाँवमें भगवान स्वामिनारायण-अक्षर-पुरुषोत्तमका मन्दिर बनवानेका उत्साह लोगोमें बहुत दिखाई देता है। सत्संगी हरिभक्तोंकी इस पवित्र अभिलाषाको पूर्ण करनेके लिये पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज बहुत उत्सुक हैं। वे प्रसन्न भी हैं। मन्दिरमें पूजनकी, साधुओंके रहनेकी और अतिथियोंके लिये भण्डारकी पूर्ण व्यवस्था होनेके बाद ही देवमूर्तियोंकी प्राणप्रतिष्ठा की जाती है।
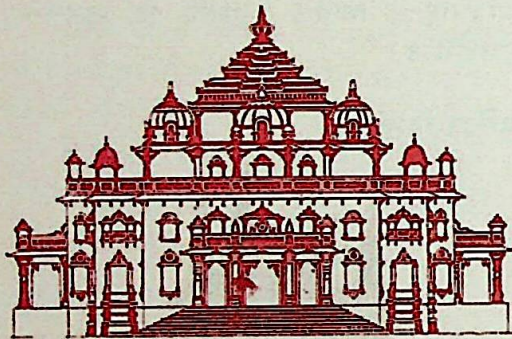
स्मारक–" अक्षरधाम "

द्विशताब्दी के अवसर पर भगवान स्वामिनारायणका एक भव्य स्मारक–" अक्षरधाम "–रचनेका संस्थाने निर्णय किया है । उसकी शिलारोपनविधि गांधीनगरमें दि. १४–१२'–७९ में पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज तथा गुजरातके तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री बाबुभाई जशभाई पटेलके शुभहस्तोंसे संपन्न हुई । उसका कार्य वेगसे चल रहा है । अल्प समयमें गुजरातका यह बेनमून स्थापत्य पूर्ण हो जायेगा । स्मारककी ऊँचाई १०० फूट, लंबाई १४० फूट, और चौडाई १२० फूट की होगी । मध्य में ३५ × ३५ फूटके गुंबजमें माणकी (अश्विनी) पर विराजमान भगवान स्वामिनारायणकी भव्य प्रतिमा रहेगी । इस स्मारक में * स्वामिनारायण दर्शन * रामायण दर्शन * महाभारत दर्शन * भारतीय संस्कृतिके विविध दर्शन-चित्र, रीलीफ, म्युरल्स वगैरह में * संतों, आचार्यों, महापुरुषों की विविध स्मृति * गीता, भागवत, वचनामृत, शिक्षापत्री आदिके शिलालेख * ध्यानखंड * ग्रंथागार आदिकी रचना होगी ।

द्विशताब्दी महोत्सव के कार्यों की रूपरेखा मात्र हमने आपके समक्ष रखी है । धार्मिक वृत्तिवाले लोग उन कार्यों में जितना प्राण अर्पित करेंगे, उतना उसमें तेज और ओज बढेगा । हम और आप इस कार्यके लिये जितना पुरूषार्थ और परमार्थ करेंगे, उतनी भगवानकी प्रसन्नता पाएँगे ।

हम इस विरल प्रसंग का अधिकतर लाभ लेनेका लोभ रखें । इस अवसरको दिव्य सुशोभित करनेके लिये हम सब पूरी भक्ति एवं शक्तिसे इस कार्यके लिये धन, मकान, जमीन, वस्त्राभूषण, अनेक साधन एवं परिश्रमका अधिक से अधिक समर्पण करें और भगवानके लाड़ले बनकर कृपा प्राप्त करें ।

भगवान स्वामिनारायण आपको सद्बुद्धि दें, प्रेरणा दें और उनकी कृपासे आप सपरिवार सुखी समृद्ध हों, यही शुभेच्छा ।

निम्नोक्त किसी भी केन्द्र में आप हमको मिल सकते हैं :

श्री अक्षरपुरुषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर.

१) **बोचासण** : ता. बोरसद, जि. खेड़ा, गुजरात.

२) **सारंगपुर** : जि. अहमदाबाद, बोटाद जंकशन के नजदीक, गुजरात

३) **गोंडल** : आशापुरा रोड, जि. राजकोट, गुजरात.

४) **अटलादरा** : पादरा रोड. वड़ौदा, गुजरात.

५) **गढडा** : वाया निंगाळा जंकशन, जि भावनगर, गुजरात.

६) **अहमदाबाद** : शाहीबाग रोड, एडवान्स मीलके सामने, गुजरात.

७) **बम्बई** : १९, स्वामी ज्ञानजीवनदासजी मार्ग, स्वामिनारायण चौक, दादर मध्य रेल्वे स्टेशन के सामने.

८) **वल्लभविद्यानगर** : श्री अक्षरपुरुषोत्तम छात्रालय, भाईकाका मार्ग, वाया आणंद, जि खेडा, गुजरात

९) **गुणातीतनगर** : ता. जोडिया, जि जामनगर, गुजरात.

१०) **सांकरी** : ता. बारडोली, जि. सुरत, गुजरात

११) कलकत्ता ; ६१, चक्रबेरिया रोड (नोर्थ), कलकत्ता-२०

परदेश के केन्द्र :

श्री अक्षरपुरुषोत्तम (स्वामिनारायण) टेम्पल :

१) **नैरोबी** : फोर्ट होल रोड, पेट्रोल स्टेशनके सामने, पो. बो. ४०५७०, केन्या, इस्ट आफ्रिका.

२) **दारेसलाम** : पो. बो. ५२८, टान्झानिया, इस्ट आफ्रिका

३) **लंडन** : ७७ एलमोर स्ट्रीट, ऑफ एसेक्ष रोड, ईझलिंटन, लिंडन, N. Y. 1. U. K.

४) **न्यूयोर्क** : ४३-३२ बावनी स्ट्रीट, फ्लशींग, N. Y. 11355, U. S. A.

श्री अक्षरपुरुषोत्तम (स्वामिनारायण) सत्संग मंडल :

१) **जोहानिसबर्ग** : C/o नरेन्द्र भट्ट, पो. बो. २५०८६, जोहानिसबर्ग-2048 साउथ आफ्रिका.

२) **केनेडा** : C/o. भगवानजी जी. मांडवीया, ३५३ ड्रीफ्टवुड एवन्यु युनिट--२ डाउन्स व्यू
ONT M3N 2P2 CANADA

भगवान स्वामिनारायण द्विशताब्दी महोत्सवके पंचवर्षीय आयोजन मे
'श्री अक्षरपुरुषोत्तम सस्थाने पूर्ण किये कार्योंकी झलक

व्यसनमुक्ति :-सदाचारवृद्धि ०२५, २४६ व्यक्तिओने व्यसनोंका त्याग किया ० २०,८५७ व्यक्तिओंने सदाचारवृद्धि की प्रतिज्ञा ली ० २२,५०२भक्तोंने 'योगयज्ञ'के व्रतनियम लिये.

सदाचार संदेश-प्रसरण : ० ३१ शिविर ०२२७ पदयात्रा ० २१ साईकलयात्रा ०१,१४३ सभा ० ९ व्याख्यानमाला ० ५२० पारायण ० २५६१ गाँवमें जनजागृतिके कार्यक्रम ० २६७ शालाओंमें सभा ० सैकडों गाँवमें 'श्रीजी सौरभ सप्ताह' मनायें गये ० ६२१ प्रदर्शन आयोजित हुए.

राहत कार्य : ० मोरबी के बाढ में संस्थाने कई राहत केन्द्र, १५५१ स्वयंसेवकोंके द्वारा सफाई कार्य, चाके स्टोल, आर्थिक सहाय, वस्त्र-वितरण, रमजान ईदमें मुस्लिम बंधुओंको भोजन समारंभ-वगैरह सहाय की.

आरोग्य प्रवृत्ति : ० १७ रोग निदान यज्ञ ० १५ रक्तदान यज्ञ ० १७ दंतयज्ञ ० ३ चश्मा यज्ञ ० ४ नेत्रयज्ञ ० २१ बाल चिकित्सा यज्ञ.

सांस्कृतिक कार्यक्रम : ० ४ बाल-युवक महोत्सव ० २ महिला संमेलन ० विदेशमें मोम्बासा, लंडन, न्यूयोर्क में युवक महोत्सव ० विविध कार्यक्रम संवाद नृत्यनाटिका, आदिका देश-विदेशमें आयोजन ० लंडन के बाल केन्द्रने अमरिका केनेडा का सांस्कृतिक प्रवास किया.

प्रकाशन क्षेत्रमें : ० ५५ गुजराती प्रकाशन ० १८ हिंदी प्रकाशन ० १२अंग्रेजी प्रकाशन ० १ बंगाली प्रकाशन ० १८ बाल प्रकाशन ० २ ऊर्दू प्रकाशन संप्रदायमें प्रथमवार 'स्वामिनारायण ब्लिस' अंग्रेजी सामयिकका प्रारंभ. ० विविध सामयिकोंमें कई भाषामें "स्वामिनारायण गौरव गाथा'का प्रसारण ० 'स्वामिनारायण मुद्रण मंदिर' मुद्रणालयका आरंभ फ्रेंच, आफ्रिकान, डच, स्वाहिली, आदि विदेशी भाषाओ में 'शिक्षापत्री'का अनुवाद-प्रकाशन.

संगीत क्षेत्रमें : संतों के द्वारा १७५ भक्ति-संगीतके कार्यक्रम ० युवकोंके द्वारा ३२ कार्यक्रम ० बालकोंके द्वारा १५ कार्यक्रम ० 'कीर्तन आराधना'की करीब ११,००० से अधिक केसेटोंका वितरण ० H. M. V. द्वारा दो L. P रेकर्ड तथा एक E. P. रेकर्डका प्रकाशन ० 'इन्डिया बुक हाउस' और 'इन्डियन मेलडीस'के सहयोगमें केसेट प्रकाशन.

तथा

० बम्बइमें दादर टर्मिनसके सामने 'स्वामिनारायण चौक' नामकरणविधि ० सेलवास (दादरा नगर हवेली) में 'स्वामिनारायण मार्ग'का नामकरण विधि ० गुजराती साहित्यकारोंका एक ज्ञानसत्र ० 'अखिल भारतीय दर्शन परिषद'ला रजत जयंती अधिवेशन.
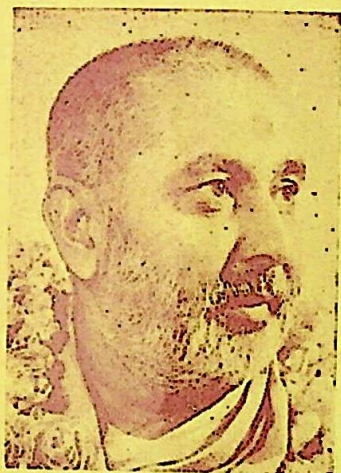
प्रगट ब्रह्मस्वरुप
स्वामी नारायणस्वरुपदासजी
(प्रमुख स्वामी)

श्री अक्षरपुरुषोत्तम
स्वामिनारायण मंदिर,
सारंगपुर
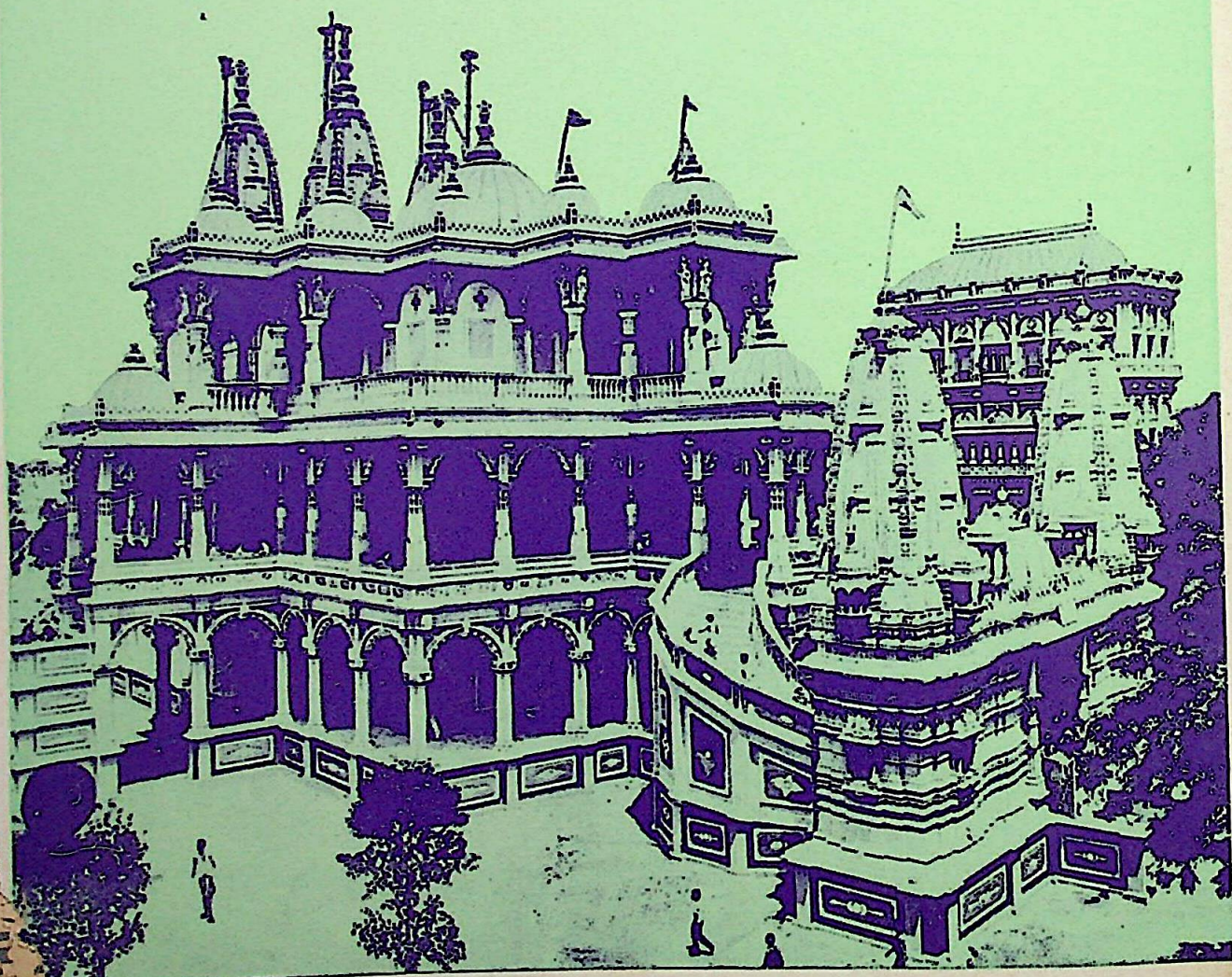
स्वामीश्री यज्ञपुरुषदासजी (शास्त्रीजी महाराज)

स्वामीश्री ज्ञानजीवनदासजी (योगीजी महाराज)

भगवान स्वामिनारायण द्विशताब्दी महोत्सव

१७८१-१९८१

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर
शाहीबाग रोड, अमदावाद ३८० ००४
फोन : २३८९१, २६७४४

printed by : swaminarayan mudran mandir, ahmedabad - Four